SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

अध्यापक की आधुनिकता के प्रति अभिवृति एवं जनसम्प्रेषण माध्यम (दूरदर्शन) के प्रभाव का अध्ययन

मिताली विश्वास, शिक्षा विभाग,
श्री वेदमाता गायत्री शिक्षा महाविद्यालय, कंगोली, जगदलपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
मिताली विश्वास, शिक्षा विभाग,
श्री वेदमाता गायत्री शिक्षा महाविद्यालय,
कंगोली, जगदलपुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 03/12/2021
Revised on : -----
Accepted on : 10/12/2021
Plagiarism : 02% on 03/12/2021

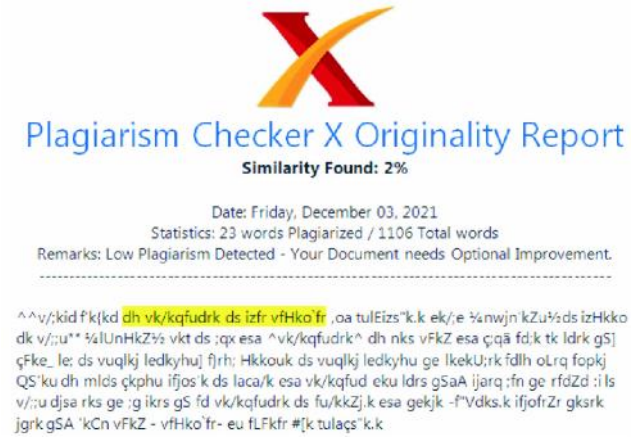
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 2%

Date: Friday, December 03, 2021
Statistics: 23 words Plagiarized / 1106 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

^^v/;kid f'k{kd dh vk/kqfudrk ds izfr vfHko'fr ,oa tulEizs"k.k ek/;e ¾nwjn'kZu½ds izHkko dk v/;;u** ¾lUnHkZ½ vkt ds ;qx esa ^vk/kqfudrk^ dh nks vFkZ esa ç;qä fd;k tk ldrk gS] çFke_ le: ds vuqlkj ledkyhuj f}rh; Hkkouk ds vuqlkj ledkyhu ge lkekU;rk fdlh oLrq fopkj QS'ku dh mlds çkphu ifjos'k ds laca/k esa vk/kqfud eku ldrs gSaA ijarq ;fn ge rfdZd :i ls v/;;u djsa rks ge ;g ikrs gS fd vk/kqfudrk ds fu/kkZj.k esa gekjk -f"Vdks.k ifjofrZr gksrk jgrk gSA 'kCn vFkZ - vfHko'fr- eu fLFkfr #[k tulaçs"k.k

शोध सार

आज के युग में ''आधुनिकता'' को दो अर्थ में प्रयुक्त किया जा सकता है, प्रथम–समय के अनुसार समकालीन, द्वितीय–भावना के अनुसार। समकालीन हम सामान्यता किसी वस्तु विचार फैशन की उसके प्राचीन परिवेश के संबंध में आधुनिक मान सकते हैं। परंतु यदि हम तर्किक रूप से अध्ययन करें तो हम यह पाते है कि आधुनिकता के निर्धारण में हमारा दृष्टिकोण परिवर्तित होता रहता है।

मुख्य शब्द

अभिवृति, जनसंप्रेषण, जनसंचार, पाठ्य, सहगामी क्रियाएं, साधन.

परिचय

समय परिवर्तशील है,तथा समय में परिवर्तन होने के साथ विचारों का महत्व भी कम होता चला जाता है। इससे स्पष्ट है कि जहाँ तक समय का संबंध है, आधुनिकीकरण अल्पकालीन है परन्तु इसकी चेतना लंबे समय तक बनी रहती है।

''आधुनिकता'' को दो अर्थ में प्रयुक्त किया जा सकता है, प्रथम – समय के अनुसार समकालीन, द्वितीय –भावना के अनुसार समकालीन। हम सामन्यता किसी वस्तु विचार फैशन को उसके प्राचीन परिवेश के संबंध में आधुनिक मान सकते हैं, परन्तु यदि हम समय की गंभीरता तथा तार्किक रूप से अध्ययन करें तो हम यह पाते हैं कि आधुनिकता का निर्धारण, हमारा दृष्टिकोण परिवर्तित होता रहता है। स्वीकृत विचार काफी पुराने भी हो सकते है। ऐसा विचार जो अप्रचलित है, विस्मृत कहलायेगा।

आज विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति होने पर मानव के

दृष्टिकोण में भी क्रांतिकारी परिवर्तन हो गया है।

आज उसमें प्राचीन प्रथाओं तथा रिवाजों के प्रति अति विशिष्ट प्रकार का लगाव छुटता जा रहा है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि भारत के लोग आधुनिकता की दृष्टि से बहुत आगे बढ़ गये हैं। निःसंदेह भारत में आधुनिकता की ओर चरण बढ़ायें है, पर हम अब भी चिर प्राचीन परम्पराओं तथा रूढ़ीवादी विचारों से मुक्ति नहीं पा सके है। दैनिक जीवन में इसके अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं, कई डॉक्टर, इंजीनियर, अध्यापक,उच्च शिक्षित लोग बीमार पड़ने पर कुशल डाक्टर की सेवाओं के साथ ताबीज भी बांधते हैं।

अतः आधुनिकता के लिए ईमानदार, सुस्पष्ट संकलना स्वयं के लिए तथा वैसे ही दूसरों के लिए होना अपरिहार्य शर्त है तभी सामाजिक व्यवस्थाओं को परिवर्तन किया जा सकता है, अन्यथा सामाजिक ध्रुवीकरण समाज को धीरे–धीरे पतन की ओर अग्रसर करता है।

इस प्रकार दूसरों की भावनाओं में प्रवेष ओर विभाजन आधुनिकता के सबसे अधिक महत्वपूर्ण लक्षण है। आधुनिकता की अभिवृद्धि रखने वाले समाज के विषिष्ट अंग है। स्वयं को नवीन वातावरण एवं नवीन पदों पर समायोजित करने की व्यक्ति की क्षमता है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से आधुनिकीकरण का अर्थ सामाजिक परिवर्तन है। शिक्षा आयोग ने भी आधुनिकता की प्रक्रिया में तीव्र गति लाने की आवश्यकता पर बल दिया है।

अभिवृत्ति

पस्टन के अनुसार – 'अभिवृत्ति किसी विषय के प्रति संबंधित धनात्मक अथवा नकारात्मक भाव की मात्रा व्यक्त करती है।'

साधारण अर्थ में अभिवृत्ति व्याक्तियों की प्रवृति की ओर संकेत करती है जिसके द्वारा किसी निश्चित वस्तु या स्थिति के प्रति व्यवहार का निर्णय लिया जाता है।

उदेश्य

1. अध्ययनरत् छात्रो, अध्यापकों में आधुनिकता की अभिवृति का मापन करना।
2. अध्ययनरत् छात्रों अध्यापक एवं छात्रों, अध्यापिकाओं में आधुनिकता की अभिवृत्ति का मापन करना।
3. छात्रों, अध्यापक व अध्यापिका पर जनसंप्रेषण माध्यम के प्रभाव में अंतर को ज्ञात करना।
4. छात्रों, अध्यापक व अध्यापिका में आधुनिकता एवं जनसंप्रेषण के मध्य सह–संबंध ज्ञान करना।

परिकल्पना

1. अध्ययनरत् छात्रों, अध्यापकों में आधुनिकता की अभिवृत्ति में सार्थक भेद नहीं होगा।
2. अध्ययनरत् छात्रों अध्यापक एवं छात्रों अध्यापिकाओं में आधुनिकता की अभिवृत्ति में सार्थक भेद नहीं होगा।
3. अध्ययनरत् शिक्षक अध्यापकों के आधुनिकता एवं जनसम्प्रेषण माध्यम (T.V.) के प्रभाव को मध्य उच्च धनात्मक सह संबंध नहीं होगा।
4. अध्ययनरत् शिक्षक छात्रों एवं षिक्षक छात्र में आधुनिकता एंव जनसम्प्रेषण माध्यम (दूरदर्शन) के मध्य उच्च धनात्मक सह–संबंध नहीं होगा।

सीमांकन

समय की निर्धारित सीमा एवं अध्ययन को देखते हुए इस समस्या का निम्न रूप से सीमांकन किया गया। प्रस्तुत शोध शहीद महेन्द्र कर्मा विश्वविद्यालय बस्तर से संबंध विभिन्न शिक्षण महाविद्यालय में पढ़ने वाले छात्रो अध्यापन को सम्मिलित किया गया है।

शोद्य विधि

सर्वेक्षण विधि।

उपकरण

आधुनिक मापनी। [The Modençation Scale (M.S.) R.S.Singh,A.N.Tripati, Ramjilal]

परिणाम एवं व्याख्या

(अ) आधुनिकता की अभिवृत्तिः छात्रों अध्यापकों की आधुनिकता की अभिवृत्ति के मध्यमान का क्रांतिक अनुपात 1. 07 है जो कि ($P \leq 0.05$) सार्थकता के स्तर के मान 1.95 से कम है यह दर्शाता है कि छात्रों अध्यापकों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

निष्कर्ष

छात्रों अध्यापकों में आधुनिकता की अभिवृत्ति में सार्थक भिन्नता नहीं है। अतः पूर्व वर्णित परिकल्पना सत्यापित हुई है।

(ब) शिक्षण महाविद्यालय में अध्ययन करने वाले छात्र – छात्राओं (छात्रों अध्यापकों) की आधुनिकता की अभिवृत्ति के मध्यमान का क्रांतिक अनुपात 1.27 है। जो कि ($P \leq$) सार्थकता के स्तर से कम है। यह दर्शाता हैं कि शिक्षण महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं में आधुनिकता की अभिवृत्ति के संदर्भ में सांख्यिकीय आधार पर कोई सार्थक भेद नहीं है।

निष्कर्ष

छात्र छात्राओं में आधुनिकता की अभिवृत्ति में सार्थक भेद नहीं पाया गया। अतः पूर्व वर्णित परिकल्पना सत्यापित हुई है।

(स) **आधुनिकता व जन संप्रेषण के मध्य सहसंबंधः** शिक्षण महाविद्यालय मे अध्ययनरत् छात्रों की आधुनिकता एवं जनसम्प्रेषण माध्यम (दूरदर्शन) के प्रभाव के मध्य सह संबंध के परिणाम दर्शाते हैं कि दोनों के मध्य नगण्य धनात्मक सह –संबंध है। पूर्व वर्णित परिकल्पना सत्यापित हुई है।

शिक्षण महाविद्यालय में अध्ययनरत् छात्रों, अध्यापक व अध्यापिका की आधुनिकता एवं जनसंप्रेषण माध्यम (दूरदर्शन) के प्रभाव के मध्य सह संबंध के परिणाम दर्शाते हैं कि दोनों के मध्य नगण्य धनात्मक सह संबंध है। अर्थात् दोनों एक दूसरे को प्रभावित करते हैं, पर उच्च नहीं है।

अतः पूर्व वर्णित परिकल्पना से सत्यापित हुई है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध में छात्रों – अध्यापकों की आधुनिकता के परिणाम दर्शाते है कि वर्तमान में आधुनिकता का स्तर सामान्य रूप से संतोषप्रद माना जा सकता है। किसी समाज से अधिकतम लाभ उसी दशा में अर्जित किया जा सकता है जब छात्र आधुनिक विचारधारा अपनाता हो क्योंकि सामाजिक,सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिपेक्ष्य में तेजी से बदलती हुए परिस्थितियों के साथ स्वयं के आत्म अनुचलन की प्रवृति व्यक्ति की आधुनिकता की अभिवृत्ति को दर्शाती है, तो यह क्षेत्रों के लिए धनात्मक संकेत है।

सुझाव

1. समाज द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में छात्र–छात्राओं को समान रूप से हिस्सा लेने में प्रोत्साहित किया जाए। वस्तुतः अध्ययन के अतिरिक्त पाठ्य–सहगामी क्रियाएँ अभिवृत्ति निर्माण में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।
2. प्रगतिशील विचारों पर आधारित ऐसे कार्यक्रमों का निर्माण किया जाए जिससे युवा पीढ़ी को ''अच्छा'' अनुकरण करने का अवसर मिल सके।

3. छात्र–छात्राएं स्वअनुभव, अवलोकन, चिंतन और निर्णय शक्ति को सबल बनाने की दिशा प्रयासरत् रहे।

संदर्भ सूची

1. सुखिया एवं मेहरोत्रा, *शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व,* प्रकाशक विनोद पुस्तक मंदिर।
2. वर्मा प्रीति, *आधुनिक प्रयोगत्मक मनोविज्ञान।*
3. गुप्ता एम., शर्मा डी., *भारत में सामाजिक परिवर्तन।*
4. भार्गव महेश, भार्गव हर प्रसाद, *आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन,* (IV संस्करण)।

****